प्रातः क्लास 2/1/1966 ओम् शांति पिताश्री

ओम् शांति। बेहद का बाप अपनी संतान को शिक्षा दे रहे हैं। भारत में जो भी शिक्षा मिल रही है उसको कहा जाता है आसुरी शिक्षा। जबकि पतित–पावन बाप को बुलाते हैं तो ज़रूर पतित हैं। पतित मनुष्य को आसुरी अर्थात् रावण सम्प्रदाय भी कहा जाता है। इसलिए बुलाते हैं पतित–पावन आओ। गाया भी हुआ है परमात्मा आते हैं तो ब्राह्मण, देवता और क्षत्रिय धर्म आकर स्थापन करते हैं। यह तो सब जानते हैं ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण बनते हैं। अब यह जैसे ब्राह्मण धर्म स्थापन करते हैं। ब्राह्मण धर्म को शिक्षा देते हैं। देवता धर्म होता ही है पवित्र। शूद्र धर्म तो अपवित्र है। ब्राह्मण भी अपवित्र हैं; परन्तु उन्हों को .... बैठ शिक्षा देते हैं। बाप कहते हैं पहले जो शूद्र वर्ण के हैं उनको ब्राह्मण बनाए फिर शिक्षा देता हूँ। ब्राह्मण पवित्र बने तब वो ही ब्राह्मण फिर देवता बने। यहाँ तो देवता बन ना सके। देवताएँ हैं ही सतयुग में। संगमयुग पर पवित्र बनते हैं जबकि ईश्वर के बनते हैं। पतित–पावन बाप आते ही संगम पर है। संगम पर बैठ धर्म स्थापन करते हैं। तो ब्राह्मणों को भी पावन नहीं कहेंगे। ब्राह्मण बन फिर शिक्षा पाते हैं। ब्राह्मण बैठ पवित्र बनते हैं। पावन दुनिया तो सतयुग है। तुमको कहा जाता है तुम बी.के.कुमारियाँ हो। पवित्र बनो तो देवता बनेंगे। जो शूद्रवंशी हैं उनको कहा जाता है पहले ब्राह्मण वंशी बनो फिर देवता वंशी बनेंगे। सतयुग में पतित कोई भी नहीं होता। यहाँ पतित और पावन दोनों हैं। बाप बैठ पतितों को पावन बनाते हैं याद की यात्रा से। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पवित्र बनेंगे। विनाश तो सबका होना है। ब्राह्मण भी जाने हैं तो शूद्र भी जाने वाले हैं। गाया जाता है शूद्रों की है विनाश काले विपरीत बुद्धि और ब्राह्मणों की है प्रीत बुद्धि। तुम और सबसे प्रीत तोड़ एक साथ जोड़ते हो। इस समय है संगम, जबकि राम राज्य, रावण राज्य दोनों हैं। रावण सम्प्रदाय बहुत हैं। राम सम्प्रदाय थोड़ी है। उनकी है प्रीत बुद्धि, उनकी है विपरीत बुद्धि। प्रीत बुद्धि वाले ...... करेंगे, विपरीत बुद्धि वाले ग्लानि करेंगे। अभी (तुम्हारा) विपरीत बुद्धि वालों से बुद्धि का योग टूटता है; क्योंकि वे बाप के दुश्मन हैं। दुश्मन ग्लानि ही करते हैं। अभी तुम हो संगमयुगी। .... बाप ने समझाया है मैं कल्प–2 संगम पर आता हूँ। आकर ब्राह्मण धर्म स्थापन करता हूँ। तो तुम हो ब्राह्मण धर्म के। ब्राह्मण धर्म सबसे श्रेष्ठ धर्म है। तुम ब्राह्मण ही हो जो तन–मन–धन से सेवा कर भारत को राम राज्य दिलाते हो। बापू गांधी को पैसे आदि इसलिए देते थे कि राम राज्य स्थापन करें। तन–मन–धन से सेवा करते थे; परन्तु रामराज्य तो कर ना सका। वो ही रावण राज्य चला आया है। राम राज्य तो निराकार प०पि०प० को ही करना है। मनुष्य कर ना सके। उसने सिर्फ फॉरेनर्स पर विजय पाई। तुमको तो प०पि०प० माया रूपी रावण पर विजय पहनाते हैं। उसने फॉरेनर्स को भगाया, तुम शूद्र धर्म को भगाते हो। बहुत फर्क हुआ ना। वो भी तन–मन–धन से सेवा करते थे गांधी द्वारा। तुम भी ब्राह्मण बन फिर तन–मन–धन से सेवा कर रहे हो भारत को पावन बनाने। ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ सब अंगुली देते हैं जो पावन दुनिया स्थापन कर रहे हो। बाप के साथ अंगुली देते हो। अभी यह आयरन एज्ड पहाड़ है ना। पत्थरों का पहाड़ है। तुम फिर सोने का पहाड़ बनाते (हो)। वहाँ सोने के महल बन जावेंगे। तुम श्रीमत से भारत को स्वर्ग, सोने का पहाड़ बना रहे हो। जो करेंगे सो पावेंगे। तन–मन–धन से सेवा करते हैं अर्थात् अंगुली देते हैं। जितनी सेवा करते हैं वह अपने लिए ही ऊँच पद पाते हैं। तुम सिद्ध भी कर सकते हो शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा ज़रूर ब्राह्मण धर्म रचेंगे। उनको पवित्र बनाते हैं। ऐसे नहीं कि संगमयुग पवित्र युग है। संगम पर तुम पवित्र बनते हो। इसलिए इसको कल्याणकारी युग कहा जाता है। बाप संगम पर ही आते हैं, जबकि पतित दुनिया पावन बनती है। हर युग में तो पावन नहीं बनेंगे जो बाप को आना पड़े। उतरती कला तो होनी ही है। यह चक्कर भी तुम बच्चों की बुद्धि में है। 84 जन्मों के डाके हैं। जन्म बाए जन्म एक–2 स्टेप नीचे उतरती है। इसलिए सीढ़ी बनाई है। भारत सतयुग था फिर 84 जन्म लेने पड़ते हैं। भारत सतयुग था। फिर 84 जन्म लेने पड़ते हैं। पुनर्जन्म सबको लेना पड़ता है। सीढ़ी चढ़ना और फिर उतरना। यह बाप ही बैठ राज़ समझाते हैं। बाप कहते हैं जिन मुआफिक याद की यात्रा पर रहो।

और कुछ भी मुख से बोलो नहीं। याद की यात्रा पर मेहनत करो। ...... (ज)ल्दी–2 ऊपर चढ़ेंगे। एक निरा(कार) बाप के सिवाय और कोई भी देहधारी को याद ना करना है। मनुष्य को भगवान नहीं कह सकते। यह बड़ी समझने की बात है। चित्र बड़े अच्छे बने हुए हैं। देखा जाता है प्रदर्शनी में समझाने से हरेक की शक्ल से मालूम पड़ता है। जैसे बाबा भी समाने सबको देखते हैं। जो अच्छी रीत समझते हैं वो तो झूलते रहते हैं। अच्छी चीज़ देख मनुष्य झूलने लगते हैं ना। तुम बच्चों का चेहरा सदैव खुशनुमा होना चाहिए। भगवान हमको पढ़ाते हैं। हम भगवान के स्टूडेंट्स हैं। भगवान–भगवती बनते हैं। बस, एक ही बात बच्चों को याद रखनी है। भगवानुवाच्य मैं तुमको राज्य योग सिखाता हूँ। और कहाँ भी भगवानुवाच्य है नहीं। शंकराचार्यवाच्य शिवानंदवाच्य कहेंगे। तो यह है निराकार भगवानुवाच्य। तो ज़रूर भगवान–भगवती ही बनेंगे। सतयुग में बरोबर भगवती लक्ष्मी, भगवान नारायण कहते हैं ना; क्योंकि भगवान ने उन्हों की आत्मा को ऐसा बनाया। ज़रूर आगे जन्म में ऐसे पढ़ाई की है। यह पढ़ाई है ही नई दुनिया अमरलोक के लिए। इस पढ़ाई से तुम विश्व के मालिक बनते हो। राजयोग मशहूर है। पतित–पावन बाप ने ही ऐसा पावन विश्व का मालिक बनाया है। बाप आते ही हैं संगमयुग पर। राम राज्य में तो कोई बुलाते नहीं कि पतित–पावन आओ। कब कहते हैं युगे–2 आते हैं। अच्छा, वो भी 4 युग हैं ना। सतयुग–त्रेता का संगमयुग, फिर त्रेता और द्वापर का, फिर द्वापर और कलियुग, फिर कलियुग और सतयुग। फिर भी उतरना ही है। यह बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। भगवान एक ही निराकार है, जिसको ज्ञान सागर, पतित–पावन कहा जाता है। सर्व को पतित से पावन बनाने वाला वो बाप है। भारत में ही गायन है तुम मात–पिता... यहाँ आकर बच्चों की पालना करते हैं। पढ़ाते भी हैं। सभी वेदों–शास्त्रों का सार सुनाते हैं। बाप के रूप में जन्म देते हैं। साथ में पढ़ाते भी हैं। फिर यात्रा भी सिखाते हैं। कलियुगी गुरु तो इस रूहानी यात्रा को जानते ही नहीं हैं। रूहानी यात्रा सुप्रीम रूह ही सिखाते हैं। तुम बच्चे जानते हो निराकार बाबा हम निराकार बच्चों को रूहानी यात्रा सिखाते हैं। कल्प–2, कल्प के संगम पर आते हैं। ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण सम्प्रदाय रचते हैं। नाम भी है प्रजापिता ब्रह्मा। विष्णु वा शंकर को वा नारायण को प्रजापिता नहीं कहेंगे। प्रजापिता एक ही ब्रह्मा है। सूक्ष्मवतन में तो प्रजा होती नहीं। नई दुनिया में है विष्णु का राज्य अर्थात् दो रूप ल०ना० का राज्य। तख्त के पिछाड़ी विष्णु का रूप रखें तो भी बात एक ही है। सा० भी विष्णु का होता है। प्रवृत्तिमार्ग दिखाने अर्थ। इसका अर्थ तुमको समझाया जाता है। विष्णुपुरी में ल०ना० का राज्य है। यह बातें तुम बच्चे समझते हो। बरोबर हम विष्णुपुरी के मालिक बनते हैं। तुम यह एलान भी कर सकते हो हम बी.के. बेहद की बाप की श्रीमत पर तन–मन–धन से भारत की सेवा करते हैं। हम पवित्र बन रूहानी यात्रा सीखते हैं। आधा कल्प तो जिस्मानी यात्रा करते आए हैं। इस समय ही रूहानी यात्रा होती है। सतुयग में भी यात्रा होती नहीं। हमको एक ही यात्रा से बादशाही मिल जाती है। दो यात्राओं का राज़ और दो बाप, तीन बाप का भी राज़ समझाना है। संगम पर हैं तीन बाप। यह बातें हैं बिल्कुल नई। बाप जब नया धर्म, नई दुनिया स्थापन करेंगे तब तो नई बातें सुनावेंगे। यह सब नई बातें हैं। कोई भी शास्त्र में यह बातें हैं नहीं। पतित–पावन बाप को भी पतित शरीर में आना पड़ता है, तब तो पावन बनावे। ब्राह्मण पावन बनने लिए पुरुषार्थ करते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो। ब्रह्मा द्वारा बाप की मत मिलती है। ऐसे नहीं कि बाप का बनने से पवित्र बन जाते हैं। नहीं। बाप युक्ति समझाते हैं अपने पौत्रों को। कहते हैं, बच्चे, मनमनाभव। ज़रूर इनको भी कहेंगे। इन द्वारा ही कहते हैं माम् एकम् याद करो। बुद्धि का योग मेरे साथ रखो। इसको रूहानी यात्रा कहा जाता है। मनमनाभव का ही है रूहानी यात्रा। अपने बाप को, अपने घर को ही याद करना है। इसलिए गाया जाता है अंतकाल जो स्त्री सिमरे... यहाँ ही बिच्छे–टिंडन जैसा जन्म मिलता है। इसलिए गुरुण पुराण में फिर सूकर–कूकर आदि दिखाए हैं। यह है ही आसुरी सम्प्रदाय। जैसी एक्ट वैसे नाम धरते जाते हैं। तुम हो ईश्वरी बच्चे। अगर बाप को

याद नहीं करते हैं, उल्टे–सुल्टे क...... कर लेते हैं। याद करने से फिर भी कुछ थमते रहते हैं। जब तक याद में रहते हैं तो मौज में रहते हैं। बाप को भूलने से लड़ने लग पड़ते हैं। आगे तुम बच्चों को यह प्रैक्टिस कराई जाती थी एकदम सूक्ष्मवतन बनाओ। आवाज़ बहुत कम। कोई भी आवे तो समझे कितना शांत में रहते हैं। हम जैसे सूक्ष्मवतन में हैं। फिर मूलवतन में चले जावेंगे। आवाज़ कम। इसको रॉयल्टी कहा जाता है। तुम विश्व के रॉयल मालिक बनते हो ना। तुम समझते हो हम कितने रा...... बनेंगे। फिर जब पतित बनते हैं तो अपने ही पास्ट चित्रों को बैठ पूजते हैं। पूज्य से पुजारी बन जाते हैं। आपे ही पूज्य... भगवान तो पूज्य–पुजारी नहीं बनेंगे। मनुष्य तो कुछ समझते नहीं। जो कुछ बोलते हैं सो रॉंग। राइटियस बोलने वाला एक ही बाप है। बाकी सब झूठ बोलते हैं रचयिता और रचना के लिए। मनुष्य होकर रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अंत को ना ...... तो कोई काम के नहीं। तुम जान जाते हो तो कितना ऊँच पद मिलता है। तुम्हारी बुद्धि कितनी ....कारी बन गई है। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने पूरा पुरुषार्थ कर रहे हो। यहाँ आए ही हो स्वर्ग, नई दुनिया में ऊँच ते ऊँच पद पाने। तुम स्टूडेंट भी हो ना। स्टूडेंट की बुद्धि में रहता है हमको अच्छी मार्क्स से पास होना है। जितना धारणा करेंगे और करावेंगे, रूहानी यात्रा पर रहेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। तुम खुद जानते हो यह नई बात नहीं है। कल्प–2 हम बाप द्वारा पढ़ते हैं और देवी–देवता बन जाते हैं। अभी संगम पर हम असुर से देवता बन रहे हैं। फिर हम असुर बन जावेंगे। सीढ़ी उतरते हैं। यह सब बातें तुम ब्राह्मणों की ही बुद्धि में है; इसलिए तुम शूद्रों को कनवर्ट कर ब्राह्मण बनाते हैं। बाप शूद्र से ब्राह्मण वा पतित से पावन बनाते हैं। पतित को पावन बनाने लिए पतित–पावन की मशीनरी जारी है। कहते भी हैं पतित–पावन आओ। हम कहते हैं पतित–पावन की मशीनरी ....की खातिर अर्थात् अपनी खातिर एक जन्म पवित्र बनो और मुझे याद करो तो पास्ट के सभी विकर्म दग्ध हो जाए। पतित–पावन बाप गंगा में स्नान नहीं करावेंगे ना। यह है गंगा स्नान की बात। बाप समझाते हैं तुम कल्प–2 पूज्य से पुजारी, पावन से पतित बनते हो। फिर मैं पावन बनाने आता हूँ। पतित दुनिया में तुम पावन दुनिया को भी जानते हो। पावन दुनिया में जब होंगे तो पतित दुनिया को नहीं जा(नेंगे)। यहाँ पतित दुनिया में दुख है तब पावन दुनिया को याद करते हैं। वहाँ तो है ही सुख। भारत पावन था ना। अभी पतित है फिर पावन बनेंगे। यह सृष्टि का चक्कर है। बाकी बाहर वालों से हमारा कोई कनेक्शन नहीं है। यह तो बाए प्लॉट है। 84 जन्म भारतवासियों के लिए ही है। उन्हों की तो द्वापर से आदि होती है। वो 84 जन्मों में आ नहीं सकते। हमको कथा चाहिए 84 जन्मों की। रचना के आदि–मध्य–अंत को वो जानते ही नहीं। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राज्य कैसे होता है, कोई जानते नहीं। हाँ, दुनिया बदलती है। यह समझते हैं; परन्तु कैसे बदलेगी यह पता ना है। दुनिया तो बदल रही है और वो आसुरी सम्प्रदाय कुम्भकरण की नींद में सोए पड़े हैं। विनाश होगा तो ज़रूर दुनिया बदलेगी ना। इस महाभारत लड़ाई के बाद ही भारत स्वर्ग बनना है। तो खुशी होनी चाहिए ना। आदि सनातन देवी–देवता धर्म की फिर से स्थापना हो रही है। यह तो तुम भी चाहते थे ना कि राम राज्य हो। तुमको भिन्न–2 प्रकार से समझाना है। दिन–प्रतिदिन समझते जावेंगे ज़रूर। ड्रामा में नूँध है। बाप को पत्रों में लिखते हैं– बाबा, फलाने की बुद्धि का ताला खोलो। खुलना तो ज़रूर है। तुम्हारी बुद्धि का भी अभी ताला खुला है ना। कुछ भी नहीं जानते थे। अभी बाबा ने ताला खोला है। माया ने गॉडरेज का ताला ऐसे लगा दिया है जो समझते नहीं कि भारत स्वर्ग था। 84 जन्म के बदले 84 लाख जन्म कह देते हैं। 84 जन्मों को ही नहीं समझ सकते हैं तो 84 लाख जन्मों को कैसे समझ सकेंगे। अभी बाप 84 जन्मों का राज़ बैठ समझाते हैं। कहते हैं– बच्चे, अभी तुमको नई दुनिया में चलना है। प०पि०प० जो

नई सम्प्रदाय रचते हैं ब्राह्मण धर्म वो ही फिर देवता बनेंगे। शूद्र से ब्राह्मण बने हैं पवित्र बनने लिए। यह है पवित्र बनने का संगमयुग। पतितों का विनाश होना है। अभी तुम संगम पर हो। ब्राह्मण धर्म में हो। फिर पीछे देवता बन जावेंगे। बाप आए कर ब्राह्मण और देवता धर्म स्थापन करते हैं। देवता बन जावेंगे ..... ब्राह्मण धर्म गुम हो जावेगा। देवता धर्म होगा। फिर क्षत्रिय धर्म होगा। यह तो अपन ही जानते हैं। अभी है शूद्र धर्म। फिर ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय धर्मों की स्थापना होती है। अभी तुम सब पुरुषार्थ कर रहे हो। बच्चों को पुरुषार्थ बहुत अच्छा करना है। तुम कल्याणकारी बाप के संतान कल्याणकारी, मददगार बनते हो। बाप कितनी सहज कहानी बैठ बताते हैं। आज से 5000 वर्ष पहले ल०ना० का राज्य था। वो पूज्य थे। पीछे उतरती कला होती है। सो देवता से फिर क्षत्रिय बने, वैश्य बने .... तो लेना ही है ना। सीढ़ी उतरते हैं। ब्राह्मण है चोटी। शिवबाबा है ऊँच ते ऊँच। फिर ब्राह्मण .... देवी–देवता धर्म। सच्चे–2 ब्राह्मण अभी तुम बनते हो। कोई को बैठ समझाना तो बहुत ही सहज है। कुछ ना कुछ समझाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। शिवबाबा को याद करते रहो। हम शिवबाबा के संतान हैं। इस याद से भी तुम नई दुनिया में जावेंगे। कोई की तकदीर में ही नहीं है तो बाप क्या कर सकते हैं। बाबा का आज्ञाकारी तो बनना चाहिए ना। बाप समझाते रहते हैं– बच्चे, एक तो यात्रा पर मस्त रहो। कितने बच्चे याद की यात्रा पर भी नहीं रहते हैं। शिवबाबा को याद नहीं करते हैं। अगर याद करते हो तो औरों को भी याद कराना चाहिए ना। गाते भी हैं– बाबा, आप आवेंगे तो आपके ही हम बनेंगे। दूसरा ना कोई। पतित–पावन एक निराकार के सिवाय किसको भी नहीं कहा जाता। बच्चों की सर्विस में बुद्धि चलनी चाहिए।

यह त्रिमूर्ति तो जैसे ट्रेड मार्क है। उस गवर्मेन्ट का और यह दोनों इकट्ठा रखना चाहिए। ऊपर में शिवबाबा तो हम दिखाते हैं। यह ईश्वरीय गवर्मेन्ट इनकॉगनिटो। वो आसुरी गवर्मेन्ट कॉगनिटो। दोनों कोर्ट ऑफ आर्म्स रखने चाहिए। इनमें कोई नुकसान नहीं है। बाप ब्राह्मणियों द्वारा भारत को स्वर्ग बनाते हैं। बी०के० तन–मन–धन से भारत को फिर से स्वर्ग बनाते हैं। पावन बनाते हैं। भाषण भी ऐसे करना चाहिए। बाप कहते हैं यह अंतिम जन्म है। तुम पवित्र बन मेरे द्वारा स्वर्ग का राजभाग लो। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। कितना सहज है। अच्छा, मीठे–2, सर्विसएबुल बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ

डायरैक्शन :– बाबा सभी सेन्टर्स प्रति डायरैक्शन दे रहे हैं कि हर सोमवार को रात को भोजन नहीं बनाना है। अच्छा, अब छुट्टी। ॐ